परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

शैक्षणिक सत्र 2020-21

कक्षा – सात विषय – हिंदी

बाल महाभारत कथा

पाठ – शकुनि का प्रवेश

मौड्यूल - 1

प्रस्तुतकर्त्री

मंजू देवी, प्र. स्ना. अ. (हिन्दी / संस्कृत)

www.BANDICAM.com

महाभारत कथा

पाठ का सारांश

लेखक परिचय

सी. राजगोपालाचार्य
(1878–1972)

स्वाधीन भारत के प्रथम गर्वनर जनरल रहे चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य 'राजा जी' के नाम से ज़्यादा जाने जाते हैं। राजा जी का जन्म 8 दिसंबर 1878 को तमिलनाडु के ज़िला सलेम में होसूर के पास थोरापल्ली गाँव में हुआ था। शिक्षा और पेशे से वकील राजा जी की मुलाकात गांधी जी से 1919 में हुई और गांधी जी के प्रभाव में आकर वे असहयोग आंदोलन (1920) में शामिल हो गए। शीघ्र ही राजा जी की गिनती स्वाधीनता संग्राम के दिग्गज नेताओं में होने लगी। तमिलनाडु के इस मेधावी वकील को महात्मा गांधी का 'उत्तराधिकारी' भी कहा जाने लगा था। 1937 में राजा जी को मद्रास प्रेसीडेंसी का प्रधानमंत्री बनाया गया। आगे चलकर जब 1946 में पहली अंतरिम सरकार बनी, उसमें भी वे शामिल थे। 1948 में वे देश के पहले भारतीय गवर्नर जनरल बनाए गए। उनकी सेवाओं के लिए उन्हें 1954 में 'भारत रत्न' की उपाधि दी गई।

राजा जी बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। उन्होंने तमिल और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में समान उत्कृष्टता से लिखा है। विशेषकर महाकाव्यों और पुराणों पर आधारित उनकी कथाएँ बहुत लोकप्रिय हुई हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें **रामायण** और **महाभारत कथा** तमिल के साथ-साथ अंग्रेज़ी में भी प्रकाशित हुई हैं। **महाभारत कथा** का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद श्री पू. सोमसुंदरम् ने किया है।

महाभारत कथा का संक्षिप्त रूप है **बाल महाभारत कथा**।

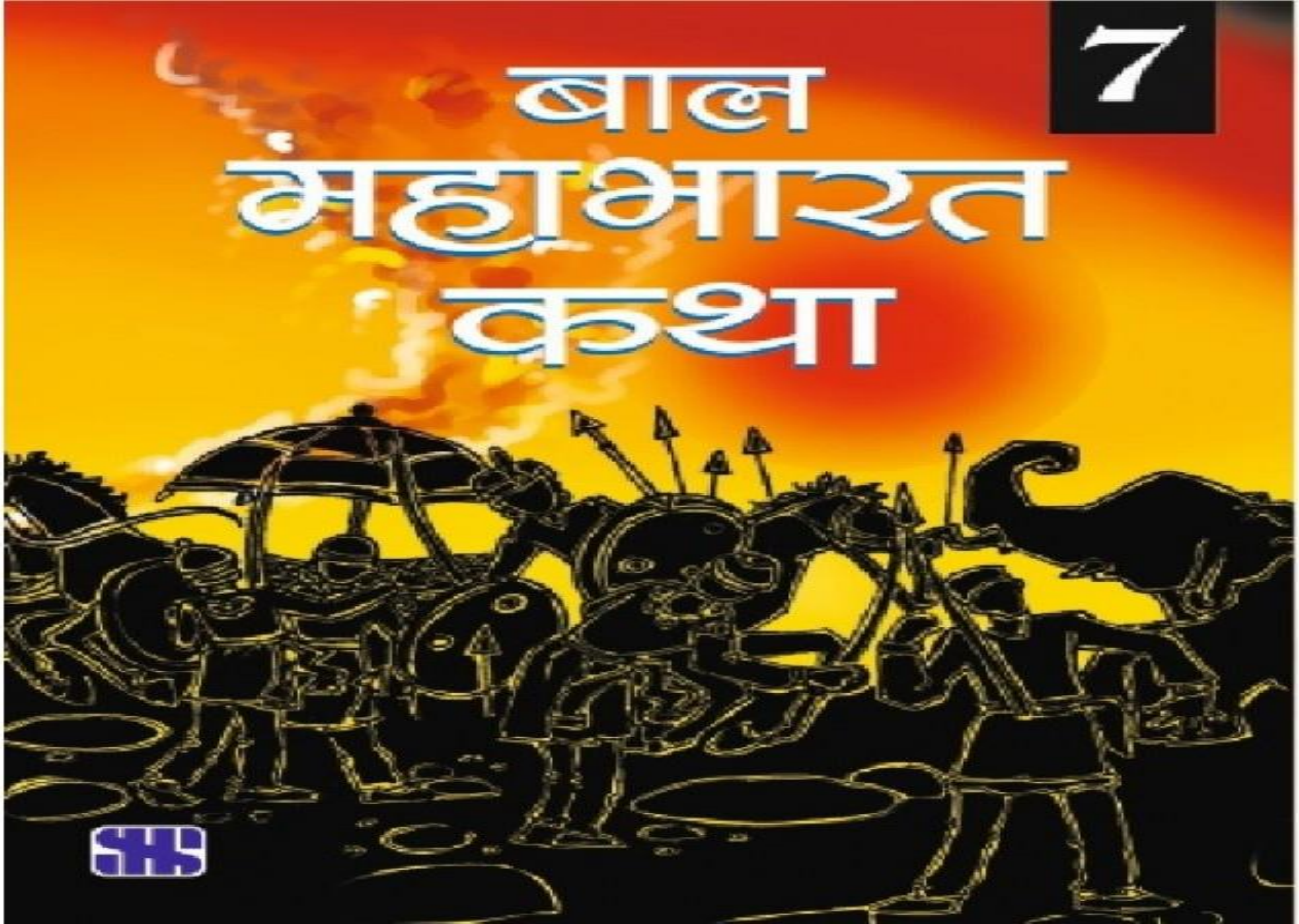
7
बाल
महाभारत
कथा

शकुनि का प्रवेश

शकुनि गांधार नरेश थे । वे धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी के भाई तथा दुर्योधन के मामा थे । वे चौसर के मँजे खिलाड़ी थे । शकुनि अपने पिता व गांधार साम्राज्य का भीष्म द्वारा किए अपमान का बदला कुरुवंश का विनाश करके लेना चाहते थे।

शकुनि का प्रवेश

14 शकुनि का प्रवेश

एक दिन युधिष्ठिर ने अपने भाइयों से कहा– “भाइयो! युद्ध की संभावना ही मिटा देने के उद्देश्य से मैं यह शपथ लेता हूँ कि आज से तेरह बरस तक मैं अपने भाइयों या किसी और बंधु को बुरा-भला नहीं कहूँगा। सदा अपने भाई-बंधुओं की इच्छा पर ही चलूँगा। मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा, जिससे आपस में मनमुटाव होने का डर हो, क्योंकि मनमुटाव के कारण ही झगड़े होते हैं। इसलिए मन से क्रोध को एकबारगी निकाल दूँगा। दुर्योधन और दूसरे कौरवों की बात कभी न टालूँगा। हमेशा उनकी इच्छानुसार काम करूँगा।”

युधिष्ठिर की बातें उनके भाइयों को भी ठीक लगीं। वे भी इसी निश्चय पर पहुँचे कि झगड़े-फसाद का हमें कारण नहीं बनना चाहिए। उधर युधिष्ठिर चिंतित हो रहे थे कि कहीं कोई लड़ाई-झगड़ा न हो जाए और इधर राजसूय यज्ञ का ठाट-बाट तथा पांडवों की यश-समृद्धि का स्मरण ही दुर्योधन के मन को खाए जा रहा था। वह ईर्ष्या की जलन से बेचैन हो रहा था। दुर्योधन ने यह भी देखा कि कितने ही देशों के राजा

मात्र से उसका दुख और भी असह्य हो उठा। पांडवों के सौभाग्य की याद करके उसकी जलन बढ़ने लगती थी। अपने महल के कोने में इसी भाँति चिंतित और उदास भाव से वह एक रोज़ खड़ा हुआ था कि उसे यह भी पता न लगा कि उसकी बगल में उसका मामा शकुनि आ खड़ा हुआ है।

“बेटा! यों चिंतित और उदास क्यों खड़े हो? कौन सा दुख तुमको सता रहा है?” शकुनि ने पूछा। दुर्योधन लंबी साँस लेते हुए बोला–“मामा, चारों भाइयों समेत युधिष्ठिर ठाट-बाट से राज कर रहा है। यह सब इन आँखों से देखने पर भी मैं कैसे शोक न करूँ? मेरा तो अब जीना ही व्यर्थ मालूम होता है!”

शकुनि दुर्योधन को सांत्वना देता हुआ बोला–“बेटा दुर्योधन! इस तरह मन छोटा क्यों करते हो? आखिर पांडव तुम्हारे भाई ही तो हैं। उनके सौभाग्य पर तुम्हें जलन नहीं होनी चाहिए। न्यायपूर्वक जो राज्य उनको प्राप्त हुआ है, उसी का तो उपभोग वे कर रहे हैं। पांडवों ने किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं है। जिस पर उनका

से प्रयत्न करके यदि उन्होंने अपना राज्य तथा सत्ता बढ़ा ली है, तो तुम जी छोटा क्यों करते हो? और फिर पांडवों की शक्ति और सौभाग्य से तुम्हारा बिगड़ता क्या है? तुम्हें कमी किस बात की है? द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा तथा कर्ण जैसे महावीर तुम्हारे पक्ष में हैं। यही नहीं, बल्कि मैं, भीष्म, कृपाचार्य, जयद्रथ, सोमदत्त सब तुम्हारे साथ हैं। इन साथियों की सहायता से तुम सारे संसार पर विजय पा सकते हो। फिर दुख क्यों करते हो?"

यह सुनकर दुर्योधन बोला—"जब ऐसी बात है, तो मामा जी, हम इंद्रप्रस्थ पर चढ़ाई ही क्यों न कर दें?"

शकुनि ने कहा—"युद्ध की तो बात ही न करो। वह खतरनाक काम है। तुम पांडवों पर विजय पाना चाहते हो, तो युद्ध के बजाए चतुराई से काम लो। मैं तुमको ऐसा उपाय बता सकता हूँ, जिससे बगैर लड़ाई के ही युधिष्ठिर पर सहज में विजय पाई जा सके।"

दुर्योधन की आँखें आशा से चमक उठीं। बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा, "मामा जी! आप ऐसा उपाय जानते हैं?"

शकुनि ने कहा—"दुर्योधन, युधिष्ठिर को चौसर के खेल का बड़ा शौक है। पर उसे खेलना नहीं आता है। हम उसे खेलने के लिए न्यौता दें, तो युधिष्ठिर अवश्य मान जाएगा। तुम तो जानते ही हो कि मैं मँजा हुआ खिलाड़ी हूँ। तुम्हारी ओर से मैं खेलूँगा और युधिष्ठिर को हराकर उसका सारा राज्य और ऐश्वर्य, बिना युद्ध के आसानी से छीनकर तुम्हारे हवाले कर दूँगा।"

इसके बाद दुर्योधन और शकुनि धृतराष्ट्र के पास गए। शकुनि ने बात छेड़ी—"राजन्! देखिए तो आपका बेटा दुर्योधन शोक और चिंता के कारण पीला-सा पड़ गया है।"

अंधे और बूढ़े धृतराष्ट्र को अपने बेटे पर अपार स्नेह था। शकुनि की बातों से वह सचमुच बड़े चिंतित हो गए। अपने बेटे को उन्होंने छाती से लगा लिया और बोले—"बेटा! मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आता कि तुम्हें किस बात का दुख हो सकता है। तुम्हारे पास ऐश्वर्य की कमी नहीं है। सारा संसार तुम्हारी आज्ञा पर चल रहा है। फिर तुम्हें चिंता काहे की?"

लेकिन शकुनि ने धृतराष्ट्र को सलाह दी कि चौसर के खेल के लिए पांडवों को बुलाया जाए।

दोनों के इस प्रकार आग्रह करने पर भी धृतराष्ट्र ने तुरंत हाँ नहीं की। वह बोले—"मुझे यह उपाय ठीक नहीं जँच रहा है। मैं विदुर से भी तो सलाह कर लूँ। वह बड़ा समझदार है। मैं हमेशा से उसका कहा मानता आया हूँ। उससे सलाह कर लेने के बाद ही कुछ तय करना ठीक होगा।" पर दुर्योधन को विदुर से सलाह करने की बात पसंद नहीं आई।

धृतराष्ट्र बोले—"जुए का खेल वैर-विरोध की जड़ होता है। इसलिए बेटा, मेरी तो यह राय है कि तुम्हारा यह विचार ठीक नहीं है। इसे छोड़ दो।"

दुर्योधन अपने हठ पर दृढ़ रहता हुआ बोला—"चौसर का खेल कोई हमने तो ईजाद किया नहीं है। यह तो हमारे पूर्वजों का ही चलाया हुआ है।" दुर्योधन के इस तरह आग्रह करने पर आखिर धृतराष्ट्र ने घुटने टेक दिए। बेटे का आग्रह मानकर धृतराष्ट्र ने चौसर खेलने के लिए अनुमति दे दी और सभा-मंडप बनाने की भी आज्ञा दे दी, परंतु विदुर से भी उन्होंने इस बारे में गुपचुप सलाह की।

शकुनि

शब्दार्थ

बेचैन = व्याकुल

असह्य = जो सहा न जा सके

सांत्वना देना = हौसला देना

ऐश्वर्य = धन-दौलत

ईजाद = आविष्कार

परम = अतिविशिष्ट, सर्वोच्च

व्यर्थ = बेकार

सहज = स्वाभाविक

राय = सलाह

प्रश्न - उत्तर

प्रश्न-1. राजसूय यज्ञ का ठाट-बाट तथा पांडवों की यश समृद्धि का दुर्योधन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तरराजसूय यज्ञ का ठाटबाट तथा पांडवों की यश समृद्धि का स्मरण ही दुर्योधन के मन को खाए जा रहा था। वह ईर्ष्या की जलन से बेचैन हो रहा था।

प्रश्न–2 दुर्योधन के कहने पर धृतराष्ट्र पांडवों को चौसर के खेल में बुलाने के लिए क्यों मान गए?

उत्तर- अपने बेटे पर उनका असीम स्नेह उनकी कमज़ोरी थी और यही कारण था कि उन्होंने बेटे की बात मान ली।

प्रश्न - उत्तर

प्रश्न–3 जुए के खेल के संबंध में विदुर की क्या राय थी?

उत्तर – जुए के खेल के संबंध में विदुर बोले, “राजन् , सारे वंश का इससे नाश हो जायगा । इसके कारण हमारे कुल के लोगों में आपसी मनमुटाव और झगड़े फसाद होंगें। इसकी भारी विपदा हम पर आएगी।

प्रश्न–4 शकुनि ने दुर्योधन को पांडवों पर विजय पाने का कौन सा उपाय बताया?

उत्तर शकुनि ने कहा,

”युधिष्ठिर को चौसर के खेल का बड़ा शौक है। पर उसे खेलना नहीं आता है। हम उसे खेलने के लिए न्यौता दें, तो युधिष्ठिर अवश्य मान जाएगा। तुम तो जानते ही हो कि मैं चौसर का मँजा हुआ खिलाड़ी हूँ। तुम्हारी ओर से मैं खेलूँगा और युधिष्ठिर को हराकर उसका सारा राज्य और ऐश्वर्य , बिना युद्ध के आसानी से छीन कर तुम्हारे हवाले कर दूँगा। "

इति

धन्यवाद